JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शोसल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

विनय सिंह रावत

शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) एल.एस.एम्.रा.स्ना.महा.पिथौरागढ़

सारांश

वर्तमान समय में सोशल मीडिया ने हमारे समाज को पूर्णतः एक नए रूप में बदल दिया हैं, और इसका सभी विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ा हैं। आज हमारी युवा पीढ़ी सोशल मीडिया के साथ जुडी हुए अनंत गतिविधियों का हिस्सा बन गयी हैं और इससे विद्यार्थियों के जीवन पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव देखने को मिल रहे हैं। सकारात्मक प्रभावों में सोशल मीडिया ने विद्यार्थियों को एक बड़े सामाजिक नेटवर्क का हिस्सा बना दिया हैं जिससे वे सभी अपने विद्यालय तथा विश्वविद्यालयों के सभी मित्रों के साथ जुडे रह सकते हैं। जिससे उनका सामाजिक जीवन समर्धि से भरा रहता हैं। सोशल मीडिया विद्यार्थियों को एक नई विचार धारा एवं अदभुत जानकारी प्रदान करता हैं। तथा यह विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में अपडेट रहने के अवसर प्रदान करता हैं, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान तथा समझ में आवश्यक सुधार होता हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने कौशलों तथा अपनी रुचियों को बढ़ा सकते हैं, वे अपनी कला, साहित्य, खेल तथा अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को दुनिया के साथ साझा कर सकते हैं, जिससे उन्हें समाज में उचित आत्म सम्मान मिल सकें। सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ विद्यार्थी यदि सोशल मीडिया का अधिमान हो जाएँ तो यह विद्यार्थी के लिए कभी कभी हानिकारक भी हो सकता हैं। यानी अधिक समय सोशल मीडिया के साथ बिताने से विद्यार्थियों की अध्ययन करने तथा अध्ययन से संबन्धित महत्वपूर्ण गतिविधियों में कमी आ सकती हैं। सोशल मीडिया के अधिकाधिक प्रयोग से विद्यार्थियों में तनाव जैसी स्थिति भी उत्पन्न हो जाती हैं। अर्थात सोशल मीडिया विद्यार्थी जीवन को दोनों सकारात्मक तथा नकारात्मक रूप से प्रभावित करता हैं। अतः हम सभी का कर्त्तव्य हैं कि हम विद्यार्थियों को सोशल मीडिया का सही उपयोग करने की सीख दें ताकि सभी विद्यार्थियों को सोशल मीडिया का सकारात्मक लाभ हो सके, और उनकी शिक्षा और विकास में कोई व्यवधान ना आयें।

प्रस्तावना-

आज का समय शोसल मीडिया और इन्टरनेट की मौजूदगी का समय हैं। वर्तमान समय में लोग किसी भी सूचना को लेकर सोशल साइट्स के माध्यम से अपनी-अपनी त्वरित टिप्पणी देने को तैयार रहते हैं, या किसी भी प्रकार की सूचना या जानकारी को आज का युवा तुरंत सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर साझा करते नजर आ रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का दायित्व प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स अधिकांश मामलों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास से सम्बंधित समस्त जानकारियों के लिए एक बेहतर

सुबिधा प्रदान करती हैं। सोशल मीडिया सूचनाओं का एक महासागर हैं, जहाँ पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की समग्र जानकारियां ही नही होती हैं, बल्कि इन सब के अलावा अन्य सभी प्रकार की जानकारियां प्राप्त हो जाती हैं। आज इन्टरनेट पर कई ऐसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स उपलब्ध हैं, जो नई पीढ़ी के युवाओं के बिकास से सम्बंधित जानकारियों एवं प्रतिक्रियाओं से परिपूर्ण हैं। ऐसे माहौल में वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को बहकाया नही जा सकता हैं। अतः यह कहा जा सकता हैं की आज सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से विद्यार्थी जागरूक हो रहे हैं, तथा सोशल मीडिया ने विद्यार्थियों को एक नवीन और बेहतर मंच प्रदान किया हैं। सोशल मीडिया का प्रयोग जहाँ विद्यार्थियों को लाभान्वित करता हैं, वही कभी-कभी इसका बहुत अधिक उपयोग करना विद्यार्थीयों के मनो-सामाजिक पक्ष पर विपरीत एवं हानिकारक प्रभाव भी डालता हैं। विद्यार्थियों को सोशल मीडिया अपनी और अधिक आकर्षित करती हैं, जिससे कई बार विद्यार्थियों को इसकी लत भी लग जाती हैं। जिससे विद्यार्थी जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। सोशल मीडिया के अधिक प्रयोग से विद्यार्थी अपनी पढाई से भटकाव की स्थिति में आ जाते हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर और इंस्टाग्राम छात्रों को विद्यार्थी जीवन में सबसे ज्यादा अपनी और आकर्षित करता हैं, जिससे विद्यार्थी अधिकांश समय चेटिंग पर बर्बाद करते हैं। और यही सोशल मीडिया उनकी पढाई बाधित करने के सबसे बड़े कारण के रूप में सामने आया हैं। सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थियों का समय बहुत अधिक बर्बाद होता हैं। जिससे उनके आने वाले भविष्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। जब से सोशल मीडिया और इन्टरनेट का दौर आया हैं, तब से बच्चे आउटडोर खेल मानों की भूल ही गए हैं, जिससे उनके मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव पढ़ा हैं। अगर देखा जाय तो सोशल मीडिया विद्यार्थियों को सबसे ज्यादा गैर जिम्मेदार बनाते जा रहा हैं। विद्यार्थी अपनी पढाई और स्कूल, कॉलेज जाने के बजाय ऑनलाइन चेटिंग, गेमिंग या इन्स्टाग्राम में व्यस्त रहते हैं।

सोशल मीडिया एक प्रकार से विश्वभर के किसी भी देश के किसी भी कोने में बैठे हुए उन लोगों के मध्य आपसी संवाद हैं, जिसके पास इन्टरनेट की सुबिधा उपलब्ध हैं। इन्टरनेट एक ऐसी सुबिधा हैं, जिसके माध्यम से व्यक्ति ना केवल अपने विचारों को वैश्विक पटल पर रख सकता हैं, बल्कि वैश्विक स्तर की सम्पूर्ण गतिविधियों से घर बैठे अवगत हो सकता हैं।यहाँ तक की व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने से अपने लोगों के साथ अपनी फोटो तथा वीडियो कॉल भी कर सकता है। सोशल मीडिया विस्फोट के इस दौर में जब सम्पूर्ण वैश्विक सूचना एक छोर से दूसरे छोर तक त्वरित गति से पहुँचती हो, ऐसे में युवाओं के विकास में सोशल मीडिया के योगदान को नकारा नही जा सकता हैं। दूर-संचार माध्यमों के विकास और बढ़ती भूमिकाओं को स्वीकार व अंगीकार करने के बावजूद कुछ वर्ष पहले तक किसी ने कल्पना भी नही की थी कि सोशल मीडिया का अंतर्जाल युवाओं की सोच, उनके विचार, उनकी समझ एवं उनके समग्र दृष्टिकोण को इस कदर प्रभावित करेगा। सोशल मीडिया के इस नेटवर्क ने सभी यूजर्स, खासतौर से युवाओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच प्रदान किया हैं। तथा सभी विद्यार्थियों ने इसे संवाद के साथ-साथ सृजनात्मक चिंतन तथा सोच का माध्यम बनाया हैं। जब सम्पूर्ण विश्व में युवाओं और सोशल मीडिया की बात की जाए तो भारत पहले पायदान पर बना हुआ हैं। भारत में सोशल मीडिया साइट का प्रभाव निरंतर बढ़ता ही जा रहा हैं, जिससे विद्यार्थियों पर सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी लगातार देखने को मिल रहे हैं। इन्टरनेट हब के द्वारा विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की जानकारियां प्राप्त होती हैं, जैसे- व्यापार, खेल जगत, विज्ञानं, प्रोधोगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म, मनोरंजन, अपराध, सामाजिक घटनाएँ आदि जिनके बारे में केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नही हो पाता हैं। अतः सोशल मीडिया साइट विद्यार्थियों के ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत बनाते हैं । यह ज्ञान कुछ हद तक तो उचित हैं, किन्तु कुछ हद तक अनुचित भी हैं। छात्र-छात्राओं द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग करने से उनके व्यवहार में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का विस्तार दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा हैं, यह बच्चों तथा युवाओं में इसकी लत बढ़ती जा

रही हैं। सोशल मीडिया का उपयोग यदि सही तरीके से किया जाय तो इसके कई फायदे सामने आ सकते हैं। सोशल मीडिया का प्रयोग कर विद्यार्थी सूचना के असीमित संसाधन, जन संपर्क का साधन, मनोरंजन के साधन, सम्प्रेषण कौशलों में बढ़ोत्तरी, बच्चों के कौशल विकास में सहायक तथा जागरूकता बढ़ाने जैसे अनेक कार्यों के रूप में कर सकते हैं। वही सोशल मीडिया का अधिक या गलत उपयोग करने से विद्यार्थियों के जीवन तथा उनके मनो-सामाजिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलती हैं, जैसे- उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गलत असर, बच्चों के यादाश्त में कमी आना, बच्चों की एकाग्रता का भंग होना, अवसाद का मुख्य कारण, चिंता का कारण, इन्टरनेट की लत लग जाना, समय की बर्बादी करना तथा बच्चों के हिंसक प्रवर्ति में बढ़ोत्तरी होना आदि को बढ़ावा देती है। अतः सोशल मीडिया विद्यार्थियों को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित करती हैं।

शोध उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत हैं-

- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु परिकल्पनाएं निम्नवत हैं-

- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई अंतर नही पाया जाता।
- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई अंतर नही पाया जाता।

शोध विधि एवं प्रक्रिया-

शोध विधि-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा शोध की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि का चयन किया हैं।

प्रदत्तों के श्रोत –

प्रस्तुत शोध अध्ययन बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रदत्तों के श्रोत के रूप में कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल द्वारा मान्यता प्राप्त सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर उधम सिंह नगर के बी.एड विभाग के द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं को लिया गया हैं।

जनसँख्या-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु जनसँख्या के रूप में कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल द्वारा संचालित,उधम सिंह नगर जिले के बी.एड संस्थानों को लिया गया हैं।

न्यादर्श-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर उधम सिंह नगर के बी.एड विभाग के द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं में से कुल 50 छात्र- छात्राओं का याद्रछिक न्यादर्शन विधि (लौटरी पद्यति) द्वारा चयन किया गया हैं।

उपकरण-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोध उपकरण के रूप में शोध कर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया हैं। इस स्वनिर्मित प्रश्नावली में कुल 40 प्रश्न रखे हुए हैं।

फलांकन-

प्रस्तुत प्रश्नावली को भरने हेतु छात्रों के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नही की गयी है, जिसे छात्र अपनी सुबिधानुसार अनुक्रिया कर सकते हैं। प्रत्येक प्रश्न के सही उत्तर पर एक अंक तथा गलत उत्तर पर शून्य अंक दिया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा मध्यमान, मानक विचलन तथा टी- परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य एवं उस पर आधारित परिकल्पना के अनुसार प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण किया गया हैं जो निम्नवत हैं-

उद्देश्य- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत उद्देश्य हेतु शोधकर्ता द्वारा एक परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो निम्नवत हैं-

परिकल्पना- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई अंतर नही पाया जाता।

इस परिकल्पना की जांच हेतु शोधकर्ता द्वारा मध्यमान,मानक विचलन व टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण निम्नवत किया गया–

तालिका -1

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	न्यादर्श	df	टी-मूल्य	तालिका मान	परिणाम
छात्र	35.66	5.05	25	48	1.36	2.00	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर हैं
छात्राएं	37.53	4.66	25				

तालिका संख्या-1 से ज्ञात होता हैं कि बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन सम्बन्धी मध्यमान क्रमशः 35.66 तथा 37.53, मानक विचलन क्रमशः 5.05 तथा 4.66 पाया गया। बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन सम्बन्धी तथ्यों का टी-मूल्य 1.36 प्राप्त हुआ। जबकि DF (degree of freedom) 48 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.00 होता हैं। अतः गणना मान तालिका मान से कम हैं, जो इस बात को दर्शाता हैं कि बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं।

उद्देश्य 2- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत उद्देश्य हेतु शोधकर्ता द्वारा एक परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो निम्नवत हैं-

परिकल्पना- बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई अंतर नही पाया जाता।

इस परिकल्पना की जांच हेतु शोधकर्ता द्वारा मध्यमान, मानक विचलन व टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण निम्नवत किया गया–

तालिका -2

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	न्यादर्श	df	टी-मूल्य	तालिका मान	परिणाम
कला	36.13	6.45	25	48	1.24	2.00	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर हैं
विज्ञानं	33.63	7.65	25				

तालिका संख्या-2 से ज्ञात होता हैं कि बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन सम्बन्धी मध्यमान क्रमशः 36.13 तथा 33.63, मानक विचलन क्रमशः 6.45 तथा 7.65 पाया गया। बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन सम्बन्धी तथ्यों का टी-मूल्य 1.24 प्राप्त हुआ। जबकि DF (degree of freedom) 48 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.00 होता हैं। अतः गणना मान तालिका मान से कम हैं, जो इस बात को दर्शाता हैं कि बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त दोनों उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं की जांच के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं। तथा बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का लिंग के आधार पर कोई प्रभाव नही पढ़ता हैं तथा ना ही विद्यार्थियों के विषय कला एवं विज्ञानं वर्ग के आधार पर कोई प्रभाव पड़ता हैं। अर्थात सोशल मीडिया का सभी प्रकार के विद्यार्थी एक समान प्रकार से उसका प्रयोग करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- कोठारी,सी आर. (1985). रिसर्च मेथोड़ोलोजी मेथड एंड टेक्नीक्स. नई दिल्ली : वेली इस्टर्न लिमिटेड.
- कोहन,लुइस.,एवं अन्य. (2013). “रिसर्च मेथड्स इन एजुकेशनल” लन्दन : रुटेज.
- गुप्ता, यशवंत.(2009). इलेक्ट्रोनिक मीडिया एवं सूचना प्रोद्योगिकी, नई दिल्ली:अर्जुन पुब्लिकेशन.
- कौल,लोकेश. (2010). “शैक्षिक अनुसन्धान की कार्य प्रणाली”. नॉएडा : विकास पब्लिकेशन हाउस.
- गुप्ता,एस पी. (2003). “आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन”. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.

- गुप्ता,ओम.मीडिया और समाज, कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली.
- जोशी,आर.एस.मीडिया और बाजारवाद,राधाकृष्ण प्रकाशन.
- सिंह,कवीन्द्र.संचार माध्यम और सांस्कृतिक वर्चस्व.शिल्पी प्रकाशन,नई दिल्ली.
- गुप्ता,एस पी. (2003). "सांख्यिकीय विधियाँ". इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.
- https://www.jagranjosh.com/articles/effects-of-social-media-on-students-life-1506341507-2
- https://www.shodhsamagam.com/uploads/issues_tbl/Social%20Media%20ka%20Ucchatar%20Madhyamik%20Sahala%20ke%20Vidhyarthiyo%20par%20prabhav%20ka%20ek%20Addhyan.pdf
- https://www.researchgate.net/publication/323903323_A_Study_on_Positive_and_Negative_Effects_of_Social_Media_on_Society